नाटक

नूरा आपा की लोरी

- सनत कुमार

पात्र : इन्दर ,बलदेव, अफजल ,बूढ़ी (अम्मा),बूढ़ा (बाबा) लड़की(राजाबिट्टो), सपाट चेहरे (३-४ व्यक्ति मुखोटे पहने हुए), दैत्य , चिपका आदमी, कांस्टेबल, अधिकारी, मुन्नी(फोनपर आवाज) , कोरस ,बजरंगी(फोनपर) ।

पहला अंक
पहला दृश्य

मंच पर ,कुर्सी ,पलंग, स्टुल, स्टोव, कुछ बर्तन,किताबें, कलम, अखबार, केलेंडर ।

कोरस :

खिजर निकले न सिकंदर निकले।
भागती सड़कों पर खंजर निकले ।।
यूँ मसीहाओं के दर थे हर सूँ ।
दी जो दस्तक तो सितमगीर निकले।।
चाँद सूरज को बसाया घर में ।
वक्त पड़ने पर वो पत्थर निकले ।।
लाश इंसान की सड़कों पर सड़ी ।
कौवे इंसान से बहत्तर निकले ।।

(नाटक आरंभ होते ही मंद प्रकाश । करूण संगीत । एक युवक एक -लाश को मंच पार्श्व (बाहर) से खींच कर मंच के अगले हिस्से में लाता है । उसके बाद एक दूसरी लाश को खींचता हुआ , अगले हिस्से में लाता है । लाशों को ढोते-खींचते वो थक गया है । हाँफ रहा है । युवक और लाशें पानी में भीगी हुई हैं । रात का वक्त । युवक बल्ब जलाता है । लाशो को गौर से देखता है । हाँफते हुए ही बोलने लगता है । युवक का नाम इन्दर है)

इन्दर : साँस चल रही है ? (बारी-बारी से दोनों लाशों के हाथ की नाड़ी देखता है ।) नाड़ी तो बंद है ।(सीने पर कान लगाता है) बिलकुल बंद । गई । गई ।(दर्शको के सामने आकर) दोनो जनी गई , यह दुनिया ....छोड़ कर लेकिन खुद छोड़ कर नही गई । खुदकुशी नही की । इनकी हत्या की गई है ।हत्या । मेरे ....मेरे सामने ।(आवेश में हाँफने लगता है । पास आकर लाशों को देखता है) कोई हरकत नहीं । काश इनमें जरा सी भी जान होती । (विराम)(कमरे में चक्कर लगाते हुए)लेकिन मै इन्हें यहाँ अपने कमरे में क्यों लाया ? ये कौन होती हैं मेरी ? (गौर से देखते हुए) नूरा आपा जैसी तो हर्गिज नहीं । (कमरे में चक्कर लगाते हुए) बेवकूफी की है मैंने । इन्हें नहीं लाता तो ?क्या बनता बिगड़ता मेरा ? लेकिन (दर्शकों से) दरिंदों ने एक दूसरा शिकार देख लिया और उधर जा दौड़े ,वे फिर आ सकते और इनके साथ न जाने क्या क्या .....! और ये बरसाती रात । लाशें सड़ती रहतीं । कुत्ते ,सुअर ,गीद्ध ,गीद्ध ,गीद्ध । (हाँफता है) काश इनकी हत्या मैं नहीं देखता । दरिंदों ने पीछे से आकर घेर लिया । मैंने रोकने की कोशिश की थी । मुँह के बल गिरा

सुन सका केवल चीखें, अट्टहास और ...ये खून से लथपथ लाशें । ...अब इन लाशों का करूँगा क्या ?(नेपथ्य से काट डालो की आवाजो के साथ विकट हास्य ,बचाव की मिन्नतें और चीखें) (युवक चौंक कर इधर उधर देखता है । फिर लाशों को बिस्तर से चादरें निकाल कर ओढ़ाता है । उनके पास जाकर खड़ा हो जाता है । लाशों की ओर देख कर झुंझला जाता है ।) बेवकूफ थी ये दोनों ।अंधेरी शाम । दंगे के बीच । घर से बाहर निकली ही क्यो ? अब मरो ।अंधेरे में दंगे में सैर करने निकली थी ।अब रात भर , इन लाशो को निहारते बैठूंगा मैं । खुद भी मरी और मुझे भी दरिंदों के बीच फँसाया । (इन्दर कुर्सी पर सिर टिका बैठ जाता है ।बूढ़ी (अम्मा) की लाश धीरे -धीरे उठती है ।)

अम्मा: अँधेरे में ही , उजाले का सपना देखा जाता है,वेटे ,दरिंदो के बीच ही । (इन्दर चौंक कर खड़ा हो जाता है । भय से काँपने लगता है । साँसे तेज हो जाती है । पीछे चलने लगता है कुछ कदम पीछे चल कर रुक जाता है)

इन्दर: तो ...तुम जिन्दी हो ? तुम ...तुम तो मर गई थी ।

अम्मा: हाँ, मैं और मेरी बिटिया मर ही गई थी । अब भी हम मरी हुई हैं । लेकिन हालात जिन्दों से लाशों जैसा बर्ताव करवाती है । तो लाशो में भी हरकत हो सकती है ।

इन्दर: (चीखकर)-लेकिन ..तुम ...सचमुच (आवेश में हाँफने लगता है)ओफ्फ!लाश बोल रही है ।

अम्मा: जबाब देने तुम्हारी बात का । क्या दिन में अंधेरा नही है ? इस अँधेरे में सपना देखती थी ।

इन्दर: इस अँधेरे में सपना?

अम्मा: हाँ,मेरी इस बेटी को पढ़ाने-लिखाने का । इसके लिए ही तो किताब लेने निकली थी रे !

इन्दर: इस अँधेरे में?

अम्मा: अँधेरे से भाग कर कहाँजा सकते हैं ? घर में भी तो अँधेरा है । मारो काटो की आवाजें सुनकर तुम घर में भी क्यों काँप जाते हो ?

इन्दर: लेकिन इस वक्त?

अम्मा: अँधेरा वक्त नहीं देखता है। जगह नहीं देखता है। अँधेरा वक्त पर सवार होता है। तब तक होता है जब तक कोई उसको वक्त पर से उतार कर ,उल्टा नहीं दें।(लड़की उठती है ।)

लड़की: समय के अंधेरे सवार को कोई उलटा देता तो हम बच जाते अम्मा? मेरा सपना भी पूरा हो जाता अम्मा ?

इन्दर: तुम भी बोल रही हो ।तुम ...एक लाश ।ओफ्फ । आज इस घर में क्या-क्याहोगा?

लड़की: जरूरी है ,भय्या लाशें अपना बयान दें क्योंकि जिन्दा कौमें गूँगी बहरी हो गई है ।(इन्दर आश्वस्त होता हैं)

इन्दर: तुम दोनों हो कौन?क्या नाम है तुम्हारा ?

अम्मा: नाम में क्या रखा हैं ।रेहाना भी हो सकता है ,सुलोचना भी ।

लड़की: मेरा नाम श्यामा भी और सायरा भी हो सकता है ।

अम्मा: तुम्हारा नाम छोटू मियाँ भी हो सकता है छोटे लाल भी ।

इन्दर: लेकिन ....मेरा नाम ..छोटू मियाँ ,छोटे लाल नहीं है ।

अम्मा: क्या नाम है तुम्हारा बेटा?

इन्दर: मेरा नाम ..(रूककर)पहले तुम दोनों अपना नाम बताओ ।

लड़की: डर गए ? सोचते हो ,नाम बताने से मारे जाओगे?

अम्मा:- डर गए हो क्योंकि तुम पर वक्त सवार है ।और वक्त पर अंधेरा ।

इन्दर: डर नहीं लगता ..नहीं ,हमला तो नहीं करोगी। हमला करनेवाले चेहरे मैं जानता हूँ ।एक दम सपाट । भयानक सपाट ।

लड़की: अब बताओ नाम ?

इन्दर: मेरा..कोई कोई नाम नहीं है ।शहर में आजकल कोई किसी अनजान को नाम नही बताता है। तुम्हारे नाम ?

अम्मा: जाने दो । नाम मे कुछ धरा नहीं ,बेटे। सभी नाम वक्त के नीचे दब गए हैं और अंधेरा वक्त पर हावी है। हम बस हिन्दुस्तानी हैं अगर, हिन्दुस्तानीपन नाम की चीज कहीं बची हो इस मुल्क में ।

लड़की: सभी नाम , सभी चेहरे गड्डमड्ड हो गए हैं । एकसपाट चेहरा है सबका एक जैसा। उस पर दरातियाँ ,छुरे चाकू , कुल्हाड़ियाँ ,तलवारें ,बंदूकें ओर बम के गोले उगे हुए हैं ।और जबान से खून...

इन्दर : (चीखकर)बन्द करो । (हाँफता है) भयानक है , ये सब कुछ । अब सब कुछ नष्ट हो जाने दो। धँस जाएँ पूरी जमीन। फट पड़े आक्काश गड़गड़ा के। धम्म से कूद पड़े हिमालय इसकी छाती पर। पिघल जाए सारी बर्फ उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों की ।लील ले महासागर इसको। यह वक्त उस पर सवार अंधेरा और हम सब (हाँफने लगता है) ।

अम्मा: ऐसा नहीं होगा और नहीं होना चाहिए।

इन्दर : इसी वक्त ने तुम लोगों की हत्या की है ।

लड़की: लेकिन भय्या ,जब कोई रहेगा हीं नहीं , बचेगा ही नहीं धरती पर तब मेरा सपना कौन देखेगा?

इन्दर : अजीब लड़की है। अब भी तुम्हें सपने की पड़ी है ।(दर्शकों की ओर देखकर)लाश चाहती है उसका सपना और कोई देखे । यह घर है कि अजायबघर ?

अम्मा: न हो तो चाय बना लो ।भींज गए हो बेटे सर्दी लग जाएगी ।

इन्दर : बना लूँगा (स्टोव जलाने का उपक्रम) आप भी चाय पीओगी ?(मन में) मेरे भींजने की चिन्ता है।

अम्मा : जरा मीठी बनाना ।इसके बाबा तो कहते थे तू मीठुक्कड़ी , खांड़ के कारखाने मे पैदा हुई है ।

लड़की : नहीं भय्या ।मैं इत्ती मीठी चाय पसंद नहीं करती ।मेरे लिए थोड़ी फीकी बनाना।

इन्दर : (चाय बनाते हुए पलट कर , खीझे स्वर में) सुन लो कान खोल कर ।मैं अलग -अलग चाय बना नहीं सकता ।अव्वल तो लाशों का चाय पीने का रिवाज कहीं नहीं है । (रूककर)मैं फीकी बनाऊँगा ।बहुत फीकी ।जिसको चाहिए ऊपर से शक्कर डाल ले ।

अम्मा : यह हुई ना पते की बात। तो मैं क्या कह रही थी बेटे ?भूल गई इसके बाबा हमेशा कहते थे तू भुलक्कड़ है ।कभी अपने आदमी को भूलकर किसी और के घर में घुस मत जाना। मजाकिया ऐसे थे कि कमर से कपड़ा खुल जाए।

इन्दर : तो फर्क क्या पड़ा हर चेहरा तो सपाट है यहाँ ।

अम्मा: नहीं रे । तब हर चेहरे अलग -अलग थे सबकी आंखों में नूर था। अमन था। झरने बहते थे दिलों में। चेहरे सपाट नही थे ।

इन्दर : (मुस्कराकर मजे लेते हुए)तो बाबा को तुम क्या जबाब देती अम्मा (अम्मा मुस्कराकर कुछ धीरे से कहना चाहती है ।यादो में डूबी हुई लजाती है)

लड़की: बाबा मुझे क्या कहते अम्मा ?

इन्दर: बड़बड़ी । तुम जैसी लड़की को और क्या कहते ?

लड़की: अच्छा मैं नही बोलूँगी अब से ।

इन्दर : बोलो ,लेकिन बात काटकर नहीं । एक भी बात ढंग से हो नही रही है । (इन्दर चाय छान कर तीन कप भरता है । अम्मा तथा लड़की को चाय के प्याले थमा कर खुद भी एक प्याला उठा लेता है)

अम्मा: (चाय पीते हुए)इसके बाबा इसको राजा बिट्टो कहते । कहते इसको खूब पढ़ाएँगे , लिखाएँगे ।यही बेटा है यही बेटी है । शाम को कारखाने से आते ही पुकारते - बिट्टो । राजा बिट्टो । वो भट्टी पर काम करते थे भट्टी ने ही उन्हें टी.बी. दी ओर हम से छीन लिया ।(उदास हो जाती)करूण संगीत ।

इन्दर: एक सपने की मौत हो गई ।

अम्मा: (धीरे-धीरे सिर उठाते हुए)सपने कभी मरते हैं बेटे । दब जाएँ धँस जाएँ ,लेकिन फिर फिर उभर आते हैं, फूट निकलते हैं,फलने-फूलने लगते हैं ।मुझे एक दुकान में गेहूँ छानने-बीनने का काम मिल गया और सेठ ऐसा कि दस मिनिट देर हो जाए , तो पैसा काट ले ...और सपना फिर फूटफूट कर निकलने लगा । यह बात अलग है कि वक्त ने फिर से उसे कुचल दिया है । (सब चुप । कुछ देर उदास धुन)

लड़की : मैंने तो सपने देखने शुरू ही किए थे (यादो में खोई हुई टहलती हुई).. किताबों को पढ़ती रहूँ , पढती रहूँ , कि अव्वल आऊँ । सर्वप्रथम !

इन्दर: अच्छा तो सर्वप्रथम जी, जिन्दा रहती तो क्या बनती ?

लड़की: मास्टरनी !(यादों में) जब कोई सवाल सही होता तो मेरी टीचर मेरी पीठ पर शाबाशी का हाथ रखती , गले लगती , चूम लेती ।

इन्दर: मास्टरनी ! (मुँह बनाकर) टीचर ! कोई बड़ी बात नहीं है ,टीचर बनना खास बात नहीं है । मेरे टीचर ने मुझे बहुत पीटा है ।हुँह !

लड़की : नहीं भैय्या ,यह दुनिया की सबसे खूबसूरत बात है मै टीचर ही बनती । कभी थोड़ा - थोड़ा डाँटती । प्यार खूब करती । पिटाई नहीं करती ।तुम्हारे टीचर दूसरी जात के होंगे याने सपाट चेहरे वाले ।

इन्दर : तुम्हारे टीचर की जात क्या थी ?उसका धर्म क्या था?

अम्मा : इस मुकाम पर तो जातें रही कितनी? वक्त पर सवार,सपाट चेहरे वालो की जात और दूसरी हम जैसे, तुम जैसे ,वक्त से कुचले गए लोगों की जात।

इन्दर : सपाट चेहरे । गंदे नालों के घिनौने कीड़े । खत्म किया जाएँ इनके कुनबों को , बड़ों को ,छोटों को ,अंडो को ,लार्वा को एक साथ ।

लड़की: (सहम कर)-भय्या ये क्या कह रहे हैं ? चेहरा देखो भय्या अपना ।तुम्हारे गाल पत्थर तो नहीं होते जा रहे हैं ।आंखे पथरा तो नहीं गई है ।(इन्दर अपना गाल सहलाता है । इन्दर और लड़की चिन्ता में अवाक)

अम्मा : देखो बेटे ,सपाट चेहरे वालों की कोई खास जात ,धर्म,मजहब नहीं होता । जरूरी नही कि पूरा कुटुम्ब सपाट चेहरो में बदल जाए ।मेरे पड़ोस में एक रहमान था और एक किसनलाल ।दोनो छोकरे साथ-साथ रहते , खाते -पीते , मजा करते ।सपाटता बहुत हल्के -हल्के कदमो से आई कि काम -धाम नहीं मिला बहुत हल्के -हल्के कदमो से आई कि बीच में, पुलिस , दारोगा , नेता , चुनाव, धर्ममजहब ,ओहदा शोहदा ....सपाटता बहुत हल्के -हल्के कदमो से आई कि असली चेहरे ही गायव ...!

इन्दर: अम्मा कोई रास्ता नहीं है चेहरों को वचाने का ?

अम्मा: गौर से देखो रास्ता वताने वालो के पेट फूल कर कुप्पा है । सारे उनके पेट में चले गए हैं । ऐसा है यह वक्त । सपाट होने से बचना मुश्किल । वे ही बचते हैं जो मेहनत करते हैं आधी रोटी खाकर भी सपना देखते हैं और गाना गाते है ।

लड़की: बाबा कितना मीठा गाते थे । वो गाना...गिलट की चाँदी चल गई जी ...वो सुनाओ अम्मा ।

इन्दर: हाँ सुनाओ ना अम्मा ।

अम्मा: (याद करते हुए)उनका गाना और सुनने वालो का झूम उठना ।मेरा उन दिनो यह सपना था कि वो सोने जैसे कपड़ो में खास शायर माफिक सजे और गाएँ ।मेरी बात सुनकर ऊपरी नाराजी दिखाते मुझे कहते कव्वाल नौटंकिया बनाना है , तुम्हें ? लेकिन अंदर-अंदर जरूर राजी होते होंगे ।

(पार्श्व से बाबा (बूढ़े)का प्रवेश । इन्दर चौंक कर पीछे हटता है । आशंकित । अम्मा बूढ़ी और लड़की विस्मित)

बाबा: ये तुमने कैसे जाना कि राजी होता था अन्दर-अन्दर ।(लड़की बाबा को गले लगाती है । बाबा लड़की को प्यार करता है और अम्मा को थपथपाता है ।

इन्दर : कौन हो तुम ? ये घर प्रेतात्माओं का अड्डा बन रहा है !

बाबा: बेटा डरो मत मैं तो तुम्हारा सपना हूँ ,जैसे ये दोनो सपने हैं तुम्हारे ही ।

इन्दर: (आक्रोश से) वाहियत ! बे बुनियाद ।मैंने ऐसा कोई सपना देखा नहीं है ।

अम्मा: झूठ ! हमारी लाशो को तुम घसीट कर लाए घर के अन्दर ।और तुम्हारे अंदर इच्छा पैदा हुई कि काश हम में कहीं बची हो साँस ।इच्छा पैदा हुई कि नाम पत्ता पूछे । हम पर गुस्सा हुए कि हम इन अंधेरे दिनों में बाहर क्यों निकली । क्यों हुआ ये सब तुम्हारे अन्दर ही ? क्योंकि तुम सपना देखते रहे हो ।(लड़का रहस्य के उजागर होने से खीझ कर बैठ जाता है)

लड़की : बाबा वही गाना सुनाओ । गिलट की चाँदी ...

बाबा: तो सुनो (गाता है ।) गिलट की चाँदी चल गई जी

गिलट की चाँदी चल गई जी
बड़ा घरां की नार गिलट में ....
जगमग हो गई जी ।
गिलट की चाँदी ......
आम पर केरी लग गई जी
गुड़ का चढ़ गया भाव
सकर भी मेंगी हुई गई जी

(खट-खट की आवाजें ।दरवाजा खोलो की आवाजें ।बाबा मंद प्रकाश में चला जाता नेपथ्य में । अम्मा (बूढ़ी)और लड़की पुनः लाशों की शक्ल में आ जाती । इन्दर दरवाजा खोलता ।

कमरे में (मंच पर)चार सपाट चेहरे वाले व्यक्तियों का प्रवेश ।)

सपाट चेहरे: इन लाशों को अन्दर क्यों लाया गया ?

इन्दर : मैं -मैं , बरसात में ....सड़क पर कुत्ते ....

सपाट चेहरे: तुम्हारी माँ बहिन तो नहीं । फिर इनके साथ भोग किया ?

इन्दर : नहीं ,नहीं ,ऐसी बात सोच भी नहीं सकता ।

सपाट चेहरे: बहुत बड़ा गुनाह । जिन्दा औरतें मिल सकती थी तुम्हें ।

इन्दर : म..म...मैं

सपाट चेहरे:ज्यादा वक्त नहीं हैं हमारे जाते ही .इन लाशों को सड़क पर पटक देना । इनकी छातियों को खूटियों पर टाँगना है ।बचे हुए शरीर को कुत्तों के सामने फेंकना है ।कल यह घर भी खाली कर देना है ।

इन्दर : म..म..म..मैं

सपाट चेहरे: मिमियाओ मत (सपाट चेहरे चले जाते हैं ।

(लाशें पुनःजिन्दा होकर उठ जाती । बूढ़ा पुनः मंच पर आ जाता । इन्दर ये सब देखकर परेशान है)

अम्मा : (बाबासे)अब वो जो गाते थे झूमझूम कर । सुना दे उसको क्या कहते हैं - जोगीड़ा ।

लड़की: हाँ,बाबूजी ,जोगीड़ा ।

इन्दर: बंद करो । भयानक है सब कुछ । वे लोग तो पत्थर है ही ,तुम लोग भी पत्थर बन गए हो ।

बाबा: बहुत परेशान हो गए हो बेटा । कैसे डर गए हो ।

इन्दर: वे लोग तुम्हारी छातियों की प्रदर्शनी लगाकर जशन मनाएँगे । शरीर की बोटी -बोटी कर , कुत्तों को डाल देंगे ।(हाँफता है)ओर तुम्हें जोगीड़ा सुनना है। मौत से ज्यादा डरावना है , मेरे लिए,ये सब कुछ देखना -सुनना ।

बाबा: बेटा ये तो लाशें हैं जिन्दा लोगो की छातियों को भी टाँगा जाता है । उछाला जाता है ,धर्म और मजहब के नाम पर ,कभी जात ,बिरादरी , प्रदेश के नाम पर ।

अम्मा : आदमीयत को भी तो रहना है ,बेटे!सुनो जोगीड़ा क्या कहता है । राजा जीने जब मृग को मार दिया तो मृग ने क्या कहा था । सुनाओ ।

बाबा: (अभिनय के साथ गाता है)-

पांचवो बाण फेरी राजा मारियो
पड़्या पड़्या रे मिरगा क्या बोले
सींग दीजो गोरख नाथ ने
घर-घर अलख जगाय
खाल दीजो साधु संत ने
लेना म्हणे बिछाय
पांव देना काबरिया चोर ने
पापी हाथ न आवे , झट से भागी जाये
मट्टी दीजो पारदी ने , देगा दुनिया में बपराय

इतना कह के मिरगो मरि गयो ।

मिरगा उपर ... । (मारो काट डालो की आवाजें नेपथ्य से)

इन्दर: बंद करो । बंद करो ।(अंधेरा घना होता । बादल की गड़गड़ाहट, बिजली की चमक । वर्षा की तेज आवाज , प्रकाश मद्दिम ।बूढ़ी तथा लड़की पुन:लाश में स्थिर । बाबा पुन: अदृश्य । बाहर से भगदड़ की मारो काटो की आवाजें । घबराते हुए एक दूसरा युवक बलदेव मंच पर प्रवेश करता है । उसके हाथ में एक छोटा बच्चा (शिशु)है ।

बलदेव: इन्दर यह रास्ते में मिला ।(बच्चे को देने के लिए हाथ आगे बढ़ाता है ।) छिपावो । वे लोग आ रहें हैं ।वे इसको मार डालेंगे !

इन्दर: (वहीं खड़ा है हाथ आगे नहीं बढ़ाता है)पूरी रात यहाँ क्या क्या होता रहा , जानते हो । अब यह नई आफत .....तुमने इसको उठाया क्यों? आ बैल मुझे मार !

बलदेव : पड़ा रहने देता ? (विराम) फेंक आऊँ वहीं । (रूककर)फेंक आऊँ?

इन्दर : मेरे सिर पर मारो । मेरा घर कब्रिस्तान बन गया है और अब अनाथालय भी (थोड़ा शांत होकर)छिपावो , जहां जगह मिले ।(दोनो टेबल के नीचे बच्चे को छिपाने की कोशिश करते हैं ।) रात को भूतो की महफिल जमी यहाँ ।

बलदेव : सपना देखा होगा ।

इन्दर : सपना ही होगा , लेकिन भयानक ।उसका खूबसूरत हिस्सा भी भयानक था । खूबसूरती और भयानकता ।दरिंदगी और इनसानी मुहब्बत एक साथ । हत्यारों ,लाशों और प्रेतों के बीच जिदंगी का जश्न । दिल दहल रहा अब तक और अब यह नई ...

बलदेव : यह लाश नहीं, सपना नहीं , हकीकत है और सपना है भी तो जिन्दा ...हर पल बड़ा होता हुआ ।

(बाहर से दरवाजा खोल की आवाजें)

इन्दर : लो वे आ गए । दरवाजा खोलो और माँगे तो सौंप दो उन्हें ।

बलदेव: नहीं दरवाजा मत खोलना ।(आवाजें तेज)

इन्दर: वे दरवाजा तोड़ देंगे ।

बलदेव: मत खोलो बच्चे की कसम है,तुम्हें । कित्ता मासूम है ।

इन्दर : इन लाशों को सड़क पर से अन्दर लाया ,तो मुहल्ले से निकाला जा रहा हूँ । इस बच्चे को बचाने में खुद खत्म कर दिया जाऊँगा (आवाजें तेज) तुम भी बचोगे नहीं ।(दरवाजा खोलता है । सपाट चेहरे मंच पर आते हैं)

सपाट चेहरे: किसी बच्चे को लाया गया है ! कहाँ है वो ?(कमरे की तलाशी लेते हैं ।)

इन्दर तथा बलदेव : बच्चा?नहीं..नहीं..(सपाट चेहरे ; बच्चे को टेबिल के नीचे से उठाकर ,हँसते हैं -हा हा हा) यह अकेला सड़क पर ...देखो कितना छोटा सा ...अकेला पड़ा था ।

सपाट चेहरे: इन लाशो को ठिकाने नही लगाया । पहला गुनाह ।बच्चे को छिपाया दूसरा गुनाह । नाम क्या है इसका ?क्या है धर्म इसका ?

इन्दर तथा बलदेव : कोई नहीं बता सकता । हम भी नहीं जानते ।

सपाट चेहरे :(बच्चे को गौर से देखने के बाद परेशान से) ये कहाँ से उठाया गया है ?

बलदेव : नल वाले चौराहे से । वहाँ तो हर तरह के लोग रहते हैं ।

सपाट चेहरे:लेकिन आगे से नहीं रहेंगे । चौबीस घन्टे में इसकी जात ,इसका मजहब मालूम करो । साँपों को फन निकालने के पहले कुचल दिया जाएगा ।

बलदेव: यदि मालुम न हो सके तो ,....

सपाट चेहरे: तब भी आशंका की वजह से इसको मार दिया जाए । यह धर्म युद्ध है ,धर्म रहित व्यक्ति दुश्मन के साथ जा सकता है ।

इन्दर: और आदमीयत कोई धर्म नहीं ?

सपाट चेहरे: बकता है कें चुए ..(सपाट चेहरों का इन्दर पर लाठियों से हमला । इन्दर घायल होकर गिर पड़ता है ।बलदेव भी इन्दर को बचाते हुए घायल होता है । लाठियाँ खाते हुए भी दोनो वच्चे को बचा लेते हैं ।)

... हम जाते हैं । चोबीस घन्टे दिए जाते हैं ।या फिर शहर को छोड़ना पड़ेगा । और कहीं भी टिक नहीं पावोगे ।

इन्दर : लेकिन ....

सपाट चेहरे: वहस करने से जबान खींच ली जाती है ।केवल सुनो ।(सपाट चेहरे चले जाते हैं ।)

इन्दर : (लंगडाते हुए आह भरते हुए)अब इस बच्चे को कहाँ ले जाएँ ?वहीं फेंक आओ इसको । हमारी मौत का सामान है ये ! आ ऽ आ ऽ ऽ

बलदेव : (दुखी होकर इन्दर को सहलाते हुए) मेरे कारण तुम्हें ये बर्बरता सहनी पड़ी ? बहुत दर्द हो रहा है ।

इन्दर : नहीं रे मैं ठीक हूँ इस बच्चे को .....

बलदेव: इसको लेकर दूसरी जगह चले जाएँ ।

इन्दर : नहीं ।नहीं इसे वहीं वहीं फेंक आओ जहाँ से उठाया था । दर दर भटका..एगा ये । एक मिनिट भी सह नही सकता मैं ...इस....को ।(बलदेव को धक्का देकर दरवाजे की तरफ ठेलता है)

बलदेव : तो तुम भी...

इन्दर: हाँ ,मैं भी उनके साथ हूँ ।मेरा चेहरा देखो सपाट बन रहा है । गाल कड़े आँखे पथराई ...जाओ ।(बलदेव बच्चे को लेकर धीरे धीरे बाहर निकलता है । इन्दर कमरे की खिड़की के बाहर बलदेव तथा बच्चे को बेचैन होकर देखता है । बच्चा रोता है । रोना सुनकर इन्दर की बेचैनी बढ़ जाती है)...ले आओ (बैठ कर हाँफने लगता है ।बलदेव बच्चे को कमरे में ले आता है)-..गला घोंट दूँगा इसका । बेहद नफरत है मुझे इस्ससे !

बलदेव:- यह तुम्हारा मेरा हम सबका सपना है । इसकी आँखो में आँख डाल कर देखो(दोनों मित्र, बच्चे की आँखों में देखते हैं।) दंगो ,हत्याओं ,लाशों,चीखों बीच भी एक सपना है यहाँ ।

कोरस: सपना देखो दरिंदगी के बीच
उठो तड़प एक किलकारी के लिए,
चीखों के बीच
सपना देखो दरिंदगी के बीच
हँसो, हँसने की कोई गुंजाइश न हो
उनके बीच
तनो, तनने की सजा हो मौत
उनके बीच
सपना देखो दरिंदगी के बीच

बलदेव: मेरे कारण तुम्हें भी आफत में ...

इन्दर: तुम्हारी गलती नहीं है, मैंने ही तुम्हें वापस बुलाया था। वास्तव में गलती नूरा आपा की है। उन्होंने ही मुझे लोरी सुनाई थी। मैं हर बच्चे को लोरी सुनाऊँगा। इसको भी।

बलदेव: नूरा आपा की लोरी तुम्हारा ये बचपन ये नशा हमेशा बना रहे। तुमसे (कुछ याद कर) एक बात कहूँ ?

इन्दर: कहो।

बलदेव: दो दिन के लिए इसे सम्हाल लो। मुझे बीमार माँ से मिलने जाना है।

इन्दर: जाओ मैं इसको बचाऊँगा और नूरा आपा की लोरी सुनाऊँगा।
(प्रकाश मंद होता हुआ)

दूसरा दृश्य

(मंच पर एक विचित्र आकृति। जूते पहने दो टाँगे। टाँगो को कई आदमी मिलकर बना रहे हैं। टाँगो के ऊपर पेट में कई जिन्दा स्त्री-पुरष-बच्चे, कंकाल, टूटे हाथ-पैर। पेट का आकार एक कोठी सा। टाँगे और पेट किसी दैत्याकार विशाल आकृति के हिस्से हैं। विशाल आकृति का शेष भाग चेहरा सिर आदि का अनुमान किया जा सकता हैं। ये हिस्से दृशयमान नहीं हैं। इन्दर, बच्चे को लेकर दैत्य के पास आता हैं)

दैत्य: (चेहरा दिखाई नहीं दे रहा है, आवाज सुनाई दे रही है)-कौन है यह ?कहाँ से उठाकर लाया है ?किस इलाके से ?

इन्दर: यह बच्चा है।

दैत्य: वो तो मैं भी देख रहा हूँ बेवकूफ।

इन्दर: ये ...ये बच्चा भर है। रास्ते में पड़ा मिला था।

दैत्य: इलाका छिपा रहा है।

इन्दर: गोमतीपुर।

दैत्य: वहाँ कहाँ ? किस इलाके में ?पत्ता लगा लें या मरने को तैयार हो जा। मेरे पेट में कुलबुला रहें, तेरे जैसे कई।

इन्दर : बता दूँगा । बता दूँगा । (मुड़ना चाहता है कि दैत्य की टाँग से एक आदमी की आँख देखकर ठिठक जाता ।आदमी के पास जाकर पूछता है)...तेरी आँख की एक कोर गीली है ।आखिर क्यों ?बता ।

चिपका आदमी : सरासर झूठ है ।

इन्दर : तू इस दैत्य की टाँग से क्यों चिपका है ?

चिपका आदमी: मैं अकेला नीं हूँ ?ये सब लोग-लुगाई चिपके हैं ।(सभी चिपके हुए लोगो के चेहरे पर कपाल पर काली लम्वी पट्टी है ।)

इन्दर : निकल आओ । दैत्य की टाँग को छोड़ दो !

चिपका आदमी : निकल गए तो फिर दैत्य की टाँग रहेगी क्या ?टाँग हमसे अलग नहीं है । हम मिलकर टाँग बनाते हैं ।

इन्दर : तो तुम हो ताकत दैत्य की । वेईमान !

चिपका आदमी : गरीब तेरे नाम तीन
लुच्चा पाजी वेईमान ।

आप भी यही कहेंगे । बर्वरता के इस मुखौटे के पीछे छिपा हुआ है ,सहम कर ,दुबका हुआ है एक आदमी जो मेहनत कर के रोटी की जुगाड़ करता था ।किसी भले आदमी ने पूछा नहीं कि कारखाने को विदेशी हाथों में क्यों बेचा गया ?कारखाना विदेशी हाथो में बिकने के वाद मुझे क्यों निकाला गया । और जब मैं अपने कस्बे मैं शरबत बेच रहा था तो पेप्सी को कौन लाया, मुझे जमीन में गाड़ने को ।यहाँ सब एक सी दास्तान है । यहाँ से निकल सकती हैं हमारी लाशें ही । इतने मजवूर है हम ।(दैत्य द्वारा बच्चे को छीनना । इन्दर द्वारा प्रतिरोध । दैत्य का अट्टहास)

इन्दर : तुझे बच्चे को छीनने नहीं दूँगा ।तेरी ताकत का राज समझ गया हूँ ।खत्म कर दूँगा तुझे ।

दैत्य : टाँग उठे ना चढ़ना चाहे हाथी (इन्दर को धक्का देकर गिरा देता है। बच्चे को छीन लेता है) अब जा इस बच्चे के राम रहीन का पता लगा । दो दिन देता हूँ । या फिर इसका भी कतल तेरा भी कतल ।

इन्दर : बच्चे को तू छीन मत ...छीन मत ...ये बहुत मासूम है ।मुझे इसको नूरा आपा की लोरी सुनानाहै ।(सिसकी भरता है तथा 'लोरी सुनाना है ' कहता जाता है ।)

प्रकाश मन्द दृश्य समाप्त

तीसरा दृश्य

(इन्दर बिस्तर में ' छीन मत छीन मत लोरी सुनाना है ' चीखते हुए सिसकी भरता है । दरवाजा खटखटाने की आवाज । इन्दर जागता है । इन्दर बैचेन सा दरवाजा खोलता है । सामने पुलिस कांस्टेवल खड़ा है)

कांस्टेबल : (अंदर आते हुए)जाहिर है ,आप परेशान हैं ।इंस्पेक्टर साहव ,माफ माफ करे , एक खास काम से भेजा गया हूँ ।

इन्दर : किसने भेजा है ?

कांस्टेबल:पुलिस अधीक्षक के दफ्तर ने ।

इन्दर : क्या कहा गया है ?

कांस्टेबल:एफ.आय.आर .के बारे में ।

इन्दर : एफ.आय आर .मैं बदलूँगा नहीं ।

कांस्टेबल:ठीक साब , कह दूँगा । (जाते हुए मुड़कर)लेकिन वे लोग ...(रूक जाता है ,जैसे क्या कहें,कैसे कहे समझ में नही आता है)

इन्दर : वे क्या हैं ?

कांस्टेबल: वे लोग बहुत ताकतवर हैं ।..अपना ख्याल रखे साब ।(कांस्टेबल चला जाता है । फोन की घंटी बजती है ।)

इन्दर : (फोन पर बातचीत) हाँ .बोलो ...क्या ?मुन्नी हॉस्पीटल में है !क्या हुआ उसको ? मुझे बताया क्यों नहीं ?हाँ ,ठीक हो रही है और ,अब्बा ,आपा ,कैम्प में ?..कैम्प में ? क्वार्टर छोड़ना पड़ा ! ओह ! इतना सब कुछ हो गया और बताया नहीं मुझको ?मुझसे पूछा नहीं । मेरा घर नहीं था ? ...कैंम्प में ठीक है ,जो तुम्हा .....री इच्छा हो करो मेरा कोई ताल्लुक नहीं है ।आगे से सब कुछ खत्म समझो ।(फोन रख देता है । दूसरी बार फोन की घंटी बजती है ।इन्दर उठाता है ।दूसरी ओर से बालिका कंठ भय्या ऽ ऽ)

इन्दर : मुन्नी है ऽऽ ।कैसी है तू ?ठीक है ?एकदम । अस्पताल से बोल रही है । नहीं नहीं घबड़ाया नहीं ,डरा नहीं हूँ ! आज शाम को तेरे पास आ रहा हूँ ।

मुन्नी : (आवाज)भय्या एक बात बताओगे ?

इन्दर : पूछ

मुन्नी : जरूर बताओगे

इन्दर : पूछ तो । क्यों नहीं बताऊँगा । जरूर बताऊँगा ।

मुन्नी : आज चाँद रात है या नहीं ?

इन्दर : हाँ आज ही है ।कल ईद है ।हम साथ साथ ईद मनाएँगे ।

मुन्नी : नहीं भय्या ,चाँद रात नहीं है ,आज । इन्सान सब के सब पत्थर में बदल गए हैं ।बस्ती बस्ती आग लगी है तपते सूरज की रात है ये । (करूण संगीत)

इन्दर : मुन्नी अब वो आग बुझ गयी है और चाँद रात आ गई है हमारी मुन्नी से मिलने । चाँदनी दरवाजे पर खड़ी है । आज हम चाँदनी में गप लगाएँगे । है ना मुन्नी बिटिया !

मुन्नी : चाँद रात है तो चीखें क्यों गूँज रही है ? ठंडी हवा का संगीत सुनाई क्यों नहीं देता ?चाँद रात नहीं है आज ।(सिसकती)(करूण संगीत)

इन्दर : सब्र करो । मुन्नी चाँद रात नहीं है ,लेकिन हिम्मत रखो ,चाँद रात हम फिर लाएँगे । (फोन रख देता है) करूण संगीत , सिसकी सा स्वर ।

दूसरा अंक

पहला दृश्य

इन्दर का घर । (इन्दर, पुलिस अधिकारियों के समूह के बीच ।प्रश्नों का सामना करता हुआ।)

पहला अधिकारी : तो एफ.आय .आर .बदलोगे नहीं ।

इन्दर : नहीं ।

दूसरा अधिकारी : कोई खास कारण नहीं दिखता है , तुम्हारी इस जिद में ।

इन्दर : जो कारण मेरे लिए जरूरी और खास है वो आपके लिए मामूली हो सकता है ।

तीसरा अधिकारी : पहेलियाँ मत बुझाओ ।कौन है जो तुमसे एफ .आय .आर .बदलने के लिए इंकार करवा रहा है ।विरोधी दल के पेंच में अपनी पतंग दे रहे हो। लेकिन जोंक में जोंक नहीं सटती । सरकार भी उतनी चालाक है । कौन है वो ?

इन्दर : कोई नहीं मैं किसी के दबाव में नहीं ।लेकिन आपको कैसे बतलाऊँ कि आँखो से मैंने जो देखा जो राहत कैम्प में सुना ,वो वो सब कितना कितना भयानक था । दिन में भी वे दृश्य याद आते हैं और ,और सच कहता हूँ,रात में सपनों में भी वे -सब के सब -आते हैं । चीखें सुनाई दे रही हैं, अट्टहास गूंज रहा है आज तक ।

पहला अधिकारी : तुमने कुछ देखा नहीं । ये सब गप है ।

इन्दर : क्या ?

दूसरा अधिकारी :मान लेना चाहिए ,कुछ देखा नहीं याद करना बंद करो ।याद ही आदमी का असल दुश्मन है । भूल जाओ सब कुछ । तब सपने भी नहीं आएंगे ।

पहला अधिकारी : मान लो हमारी बात और एफ.आय.आर. बदल दो ।

इन्दर : सच्चाई को झुठला दूँ?

तीसरा अधिकारी : तो तुम्हारा यहाँ से खदेड़ा जाना तय है । नंगी ने घाट रोका, नहाय न नहाने दें ।

इन्दर : जहाँ भी आप भेजें,चला जाऊँगा । उन लोगो को न्याय मिले,इसकी कोशिश करता रहूँगा ।

दूसरा अधिकारी : चलो (सब खड़े होजाते हैं । चलते हुए)टाँग उठे ना चढ़ना चाहे हाथी । कोशिश करते रहना बच्चू ।

तीसरा अधिकारी : जो आग खायेगा , अंगार हगेगा ।

पहला अधिकारी : ईमानदारी की पूँछ के सींग नहीं होते हैं । (जाते हैं)

दूसरा दृश्य

इन्दर का घर ।(इन्दर और अफजल के बीच बातचीत)

इन्दर : मेरी बदली की गई है तो इसका कसूर मेरा है । मैंने मेरा ट्रांसफर करवाया है । मैंने कहा - आ बैल मुझे मार ।अफजल भाई आपका क्या कहना !

अफ़जल :कहा नहीं तो क्या ,किया तो सही ।

इन्दर : तो क्या एफ.आय .आर. बदल देना चाहिए थी ?अब तो मुझे तुम पर भी शक होता जा रहा है । देखो, तुम चाहे जितना उनके पक्ष में नाच लो ,कूद लो तुम्हें तो वे पुलिस हाउसिंग बोर्ड में ही रखेंगे । कानून और व्यवस्था तुम्हें सौंपेंगे नही । किस दुनिया में हो अफ़जल ?

अफ़जल : जानता हूँ इन्दर ।लेकिन एफ.आय.आर. तुमने न बदली तो कोई और बदल देगा ? तुम वहाँ रहते तो लोग थोड़े इतमीनान से रहते । उनमें भरोसा रहता । तुम उन्हें थोड़ा बचा सकते इन्दर ।

इन्दर : एफ.आय. आर .बदलने के बाद बचे हुओं पर फिर से हमला किया जाता ।
मासूमों का फिर से अंग विच्छेदन , बलात्कार ,जिन्दा जलाना ...नहींनहीं ,
उस जगह से निकलना अच्छा हुआ ...(मौन । कुछ देर का विराम ।निःशब्दता ।)

इन्दर : तुम गोमतीपुरा कब लौट रहे हो ?

अफजल :गोमतीपुरा से जहाँपरा चले गए हम ।

इन्दर : क्या जहाँपरा ! अच्छा भला मकान है गोमतीपुरा में उसे छोड़ जहाँपरा में ।अपनी बस्ती छोड़, पराई बस्ती में ।

अफजल: अब यही सच्चाई है । गोमतीपुरा अपनी बस्ती ही है ।अपने लोगो से शिकायत भी नहीं है । लेकिन जब बाहर से उन्मादियों का टोला आता ,तब अपनों में से कुछ डर कर दुबक जाते , कुछ के चेहरे सपाट हो जाते ,और कुछ बाहर वालों के साथ भी हो जाते ।जो हमें बचाने आगे आये ,उन्हें भी टोले की डाँट मार -धमकी मिली ।गीता बेन का गुनाह.ये था कि उसने दूसरे धर्मवाले से शादी की ।इससे भी बड़ा गुनाह ये था किउन्होंने ,उसको बचाया और भगा दिया । गीता बेन को टोले ने सरे आम नंगा किया और तलवार से काट दिया !यही है सच्चाई!

इन्दर : तो क्या जहाँपरा ही सच्चाई है ? किस दौर में पहुंच गए हैं हम अफजल भाई , एक पुलिस इन्सपेक्टर का कुटुम्ब राहत छावनी में आसरा ले और फिर जहाँपरा जाए । कैसा दौर आया है ये ?

अफजल :राहत छावनी में रिटायर्ट जज सिद्दीकी साहब भी हैं । वे हायकोर्ट जज रहे हैं । सारी चीजें गड़बड़ा गई हैं । पहचाने मिट रही हैं ।

इन्दर : (आवेश में) ये सच्चाई है । तो ये झूठी सच्चाई है । इसको मान लेना हम सब की आत्मा की हत्या है ।अफ़जल , बताओ इसको बदला नहीं जा सकता ? इस झूठी सच्चई को बदलो । मेरा दम घुट रहा है , जैसे दो देशों में बंटवारा हो रहा है !

अफ़जल:बहुत बहुत घबरा जाते हो तुम ।बहुत बहुत कमजोर हो जाते हो इन्सपेक्टर इन्द्रमोहन सिंह!

इन्दर : तुमने भी वो खौफनाक दृश्य देखे होंगे । सुनी होगी वे कहानियाँ ।

अफ़जल :मेरे चाचा और मेरी मौसी अपने -अपने कुटुम्ब के साथ मौत के मुँह में समा गए हैं , उसी दौर में ... ।

इन्दर : क्याऽऽऽ ऽ......?

- मौन-

....

....

अफजल :ये अंधेरे का समय है जरूर लेकिन इसी दौर के काले पहाड़ों को फोड़कर उम्मीद के सोते फूट पड़े हैं । तुम .. तुम उनको देख नहीं पा रहे हो?

इन्दर : अंधेरा पहले से ज्यादा घना है और संगठित ।

अफजल :लोगों ने एक दूसरे को बचाया भी है ।जान पर खेल कर । एक दूसरे की बहिन बेटियों की शादियाँ की हैं ,मामेरे किए हैं ,कन्या दान किए हैं ....सोते बह रहे हैं ।अभी भी मामेरे के गीत सुनाई दे रहे हैं । जूनागढ़ से एक बस में चढ़ा था कि रास्ते में मामेरा ने बस थोड़ी देर के लिए रोक दी ।.....मामेरा लाने वाले मुस्लिम थे । उनके स्वागत में हिन्दु बहनें गा रही थी ।

वीरा म्हारे माथा ने मेमंद लाजो ।
म्हारी रखड़ी रतन जड़ाजो जी ।
वीरां रमा-झमा से म्हारा आजो ।
वीरां आप आजो भावज ने लाजो ।
सरदार भतीजा लारे लाजोजी ।वीरां रमा झमा ....

इन्दर : कई वार ये उम्मीद बड़ी धोखा देती है । पुलिस से, सरकार से , उम्मीद थी ,और जब चकना चूर हो गई उम्मीदें ,लहू लुहान हो गई इन्सानियात ।जिन्दा बस्तियाँ राख के ढ़ेर में बदल गई तब .....

अफजल: ठहरो ! तब ....राख की ढ़ेरी की बगल से एक जिन्दा औरत जकियाबेगम उठती है । नरोडा में एक बार घर जलाया गया , अब के ४२ लोगों का पूरा कुटुम्ब कबीला और आगे भी जो हो...' लेकिन मैं रहूँगी यहीं । इन्हीं लोंगो के साथ ! अभी बहुत कुछ बचा है । '

इन्दर : हाँ, रेल्वे के डिब्बे में जिंदा जले लोग ....उनमें से किसी एक की बेटी ने कहा था, पापा को मैंने खो दिया है ,लेकिन और बेटी अपना पिता खोए ये मैं नहीं चाहती । इस लड़की की आवाज में कई आवाजें मिल रही हैं । हाँ बचा है , थोड़ा सा तो बचा है । (फोन की घंटी बजती । इन्दर उठाता है)

आवाज (फोन पर) : इंस्पेक्टर इन्द्रमोहन ?

इन्दर : हाँ , मैं इन्द्रमोहन बोल रहा हूँ ।

आवाज : बचा हुआ है तेरा जॉब और तेरी जिंदगी मेरी दया से ।

इन्दर : कौन हो तुम ?मुझे किसी की दया की ....

आवाज : चोप !आवाज नहीं । तुमने एफ.आय.आर . बदलने से इन्कार करके एक बड़ी गलती की। दूसरी बड़ी गलती ये की है कि पेपर वाले को बता दिया कि तुम्हारा ट्रान्सफर प्रमोशन नहीं है । तुम्हें हिदायत दी गईथी कि अपने ट्रान्सफर को प्रमोशन कहो ।सुन बे मैं बजरंगी पहलवान हूँ ।और चीफ मिनिस्टर की ऑफिस से , उसकी तरफ से बोल रहा हूँ । वो मेरे पास खड़ा है ।

इन्दर : तुम बजरंगी हो ! तुम्हारे खिलाफ तो सैकडो एफ.आय.आर . है । तो तुम सी .एम .के आदमी हो ।

बजरंगी :सी .एम .मेरा आदमी है ।अब बोल क्या केता वे ? ज्यादा चीं चीं मत कर ....मेमने । तुझे मैंने खत्म नहीं किया और ट्रान्सफर करवा दिया , ये प्रमोशन से कम नही है । तेरी जिंदगी बख्श दी ।ट्रान्सफर को प्रमोशन मान या चार्जशीट के लिए तैयार रे । थोड़ा कानून हम भी जानते हैं बेटे ।(फोन बन्द हो जाता है । इन्दर फोन रख देता है)

इन्दर : ये ये ये ...तुम्हारी उम्मीद है । क्या कहा उस हत्यारे के सरदार ने ?पुलिस रेकार्ड में जो भगोड़ा है वो सी. एम .का शाही मेहमान है । वो मुझे धमकी दे रहा था ।उम्मीद करते रहो

और इस व्यवस्था की जी हुजुरी करते रहो ।हम क्या हैं ? क्या है हमारी हैसियत ? बजरंगी का आदमी है सी.एम.।आदमी का आदमी नहीं होता है ।तो हम हुए सी.एम. आदमी के मेमने (विक्षिप्त-सा चार हाथ पैरो से चलता हुआ मैं मैं करता है । अफजल उसकी हरकत से परेशान है)मैऽ ऽ मैं ऽ

अफजल :क्या कर रहे हो?खड़े हो । पागल हो गए हो ?

इन्दर : मैं पागल नहीं मेमना हूँ। हत्यारे के सी.एम. नाम के आदमी का मेमना । मैंऽ ऽ मैं ऽऽ(मैंऽ ऽ मैं करता अफजल के पास आता है ।आवेश और उन्माद पिघलने लगता है । अफजल से लिपट कर रोता है। अफजल उसको धैर्य देता है ।)

अफजल :तुम नूरा आपा की लोरी सुनाते थे ,मुझको ,मुन्नी को ।हम साथ साथ तुम्हारी नूरा आपा की लोरी गाते थे ।आज उसे फिर से सुनाओ ।

इन्दर : अब कभी नहीं बिलकुल नहीं ।

अफजल: क्यों भाई ?लोरी से भी लड़ाई है ?

इन्दर : नूरा आपा ने इतना प्यार किया और उनकी यह लोरी - उनके प्यार ने और लोरी ने मुझको कमजोर कर दिया । इतना प्यार क्यों करती थी नूरा आपा ।दस साल का था । बुखार हो आया था । उतरने का नाम नहीं । टायफायड था कि पीलिया । नूरा आपा रतलाम में थीं । खबर कैसे पहुँची उन तक। चौथे दिन दौड़ते हाँफते आ पहुँची और पूरे दिन, पूरी रात बर्फ की पट्टियां । कई दिन कई रात ।वैध हकीम डाक्टर । दौड़ भाग । कई दिन, कई रात । दुआ मन्नत ,दुआ मन्नत । क्यों इत्ता प्यार दिया । मोहल्ले में जो भी बच्चा बीमार हो नूरा आपा पूरी रात कंडील की रोशनी में उसके पास बैठेगी ।क्यों इत्ता प्यार किया ?मैं नूरा आपा को भूलना चाहता हूँ ।मैं आक्रामक , हिंसक होना चाहता हूँ ।

अफजल:(हँसकर) बजरंगी का असर है । नूरा आपा को भूल सकते हो ?(विराम........) अरे भई , अब तुम उग्र हिंसक ,आक्रामक चाहो तो भी हो सकते नहीं ।दरअसल चाह भी नहीं हो सकती ।मुझे कहीं से भी .....(इन्दर को दूर से देखकर)कहीं से भी कमजोर नहीं लगते । नूरा आपा के प्यार ने और उनकी लोरी ने तुम्हें मजबूत बनाया है । इंसानियत की ताकत तुममें है इतनी कि बजरंगी और सी.एम. के सामने खड़े हो तुम. ।कहाँ हो कमजोर ?अगर इसे तुम कमजोरी मानते हो तो ये कमजोरी मुझे भी चाहिए । तुम्हारी कमजोरी मुझे दे दो। (इन्दर आश्वस्त होकर मुस्कराता है ।)

(पास आकर) सुनो, देश छोड़ने का मेरा भी एक बार मन हो गया था ।(इन्दर चौंकता है) चौंको मत । अंधेरा घना होता है तो आदर्श उड़ने लगता और सच्चाई झूठी लगने लगती और झूठ सच लगने लगता । लेकिन इसकी मिट्टी में ,पत्ती में ,फल में ,फूल में ,हवा में , पानी में,पसीने में, नदी में , झरने में पर्वत में और ....और ..और तुम्हारी नूरा आपा की लोरी ...... लोरी में जो गंध फैली है वो परदेश में कहाँ ? रोक लिया इस गंध ने ।

इन्दर : (खुश होकर) इस गंध की ताकत खूब है । खूब है । लोरी की ताकत । नूरा आपा की लोरी हमें सुलाती नहीं थी ,जगाती थी । वो जगाने वाली लोरी है । पाँचवी में रहा होऊँगा । मालवा मिल में हड़ताल चलरही थी । एक दिन कोई मंत्री शहर में आने वाला था । रात को मुहल्ले की चौपाल पर मजदूरो ने एका किया कि सुबह मंत्री को काले झंडे बताये जाएँ । पर रात को काले झंडे कहाँ से लाएँ ।घर में सब इसी गुंताड़े में थे कि,नूरा आपा कई कई

काले झंडो को लहराती घर में आई ।आपा ने एक या दो दुपट्टे को चीर कर ये झंडे बनाये थे ।यह दृश्य कभी भूलता नही। कल्पना में कई चीजें जुड़ जाती ..आपा कई तिरंगें झंडो को लहराती हुई...आपा कई लाल झंडो को लहराती हुई .. मुझे अचरज हुआ था जब बड़े होने पर सुना था कि विधवा नूरा आपा नि:संतान थी । हम सब कौन थे ? आपा के बच्चे ही न ? झंडो को लहराती ,जगाने वाली लोरी के बच्चे ।

(फोन की घंटी)इन्दर उठाता है फोन ।

मुन्नी : (फोन पर) इन्दर भाई साहेब ,अफजल भाई साहब हैं ना ?

अफजल :(फोन पर)हाँ , मुन्नी बोल ।

मुन्नी : आपको छोटे चाचाने बुलाया है ।जल्दी आ जाइये । जरा , इन्दर भाई साहेब को देना ।

इन्दर : (फोन लेते हुए) बोल मुन्नी रानी । तबीयत ठीक है ? अच्छा तेरे लिए कुछ नई किताबें लाया हूँ ।अफजल भाई के हाथों भिजवा रहा हूँ ।और कुछ चीज चाहिए तुझे ?

मुन्नी : एक बात पूछनी है ।यहाँ तो कोई ठीक से बताता नहीं ।

इन्दर : पूछ तो ।

मुन्नी : भइया .....नाराज मत होना ....चाँद रात कब आएगी ?लोग झूठ मूठ की चाँदरात बता रहे थे परसों । ईद भी मना ली ।मैंने , मैंने नहीं माना ।आप ही बताये कि चाँद रात होती सच्ची में तो लोग इतने गमगीन होते ?इत्ते चुपचुप रेते? मै केती हूँ चाँद रात अभी आनी है ,आप बताये चाँद रात आ गई या आनी है ।

इन्दर : चाँद रात आनी है ,मुन्नी ।

मुन्नी : कब आएगी ? मेरी सहेलियाँ सब की सब पूछती हैं ।उनके ख्याल से मेरा दिमाग चल गया है ।

इन्दर : नही मुन्नी !तू ही सच्ची है चाँद रात तो आयेगी ही ।कब आएगी -ये बड़ा मुश्किल सवाल है । पता लगाकर बताऊँगा । एक आदमी नहीं कई-कई लोग मिलकर चाँद रात लाएंगे । .... हाँ ......जरूर... (फोन रख देता है टेबिल से किताबें उठाता है)

प्रकाश मंद....

तीसरा अंक
दृश्य-एक

(इन्दर अपने कमरे में चक्कर लगा रहा है ।आत्म कथन । एकालाप)

इन्दर : सुबह से छत पर चक्कर ....थका बिलकुल नहीं ।मत पूछना ।क्यों लगा रहा हूँ? (मौन)।२७ जून से ।२७ जून याद है ? दिमाग पर जोर दो । और दो । और ?और ?...... ....! और (हाथ से बोलने का इशारा करते हुए ।.....साँस टूट जाती है ।) चंद्रशेखर आजाद ।याद नहीं आएगा ।कौन था वो? क्यों था वो ? तुम्हारे लिए । भूल जाओ । इस अंधेरे में याद कौन करेगा ! २७जून को हम उस बलिदानी को याद करते थे । उसकी वो आखिरी गोली ।सबसे बड़ा बलिदान । इस आजादी के लिए ! ये आजादी ! (विराम)२७ से भटक रहा । गलियाँ , सड़कें , मकान दर मकान , लेकिन बगैर बड़े बलिदान के .. धर कूँच धर मुकाम ....। खोज है मुझे ।वो बच्चा वो नन्हा । बचा होगा वो? अब तक । ना मत कहना । मेहरबानी करके प्लीज ना मत कहना .....।
बहुत डरा हूँ । ये डर लाइलाज ।अनजानी गलियाँ , बिखरे हुए मांस के लोथड़े । मांस के लोथड़े से आप पूछ सकते हैं कि वो किस शरीर का हिस्सा है ?किस रूप रंग के शरीर का ।मैंने नहीं पूछा ।जीप को रोकता नहीं ।गुजर जाता । लोथड़ों की दबी -दबी सिसकियां सुनता रहता, सुनता रहता ,बलदेव कहता , ' दिमाग चल गया ।सपने में देखा वो सच मान बैठा '।आप बताएं ।ऐसा हो नही सकता ! क्यों नहीं हो सकता! वो बच्चा मिल जाए तो ? जानते हो क्या करूँगा? उसको नूरा आपा की गोद में ...(रूक जाता है)नूरा आपा को जानते हो ? नहीं? नहीं जानते ?(बेचैनी से टहलता है) आप राष्ट्रपति को जानते हैं , प्रधान मंत्री को जानते हैं ,गली के नेता को भी जानते हैं और , उन भेड़ियों को , तलवारों को , मशालों को ,राक्षसी हा हा को जानते हैं ।नूरा आपा को नहीं जानते ? तो क्या खाक जानते है आप ?आप की सारी डिग्रीयां रद्द करो । रद्द करो ।(हांफता है) नूरा आपा को जानना मुश्किल है ।आप की गलती नी है । नूरा आपा ! इस जगह , इस दौर में ! कौन जानेगा ! नूरा आपा को जानने के लिए जरूरी है , कुछ ऐसा हो ,ऐसा कि ....(चहल - कदमी करता है । कल्पना में देख रहा है ..) पहाड़ दूध की नदियों में बदल जाएं , नदियां दिलों में ,दिल गोद में -नूरा आपा की गोद ।ऐसा हो तो , नूरा आपा को आप जान सकते हैं ।(मौन । किताबों को सहेज कर एक थैली में रखता जाता है।)

मैं भी कहाँ जान सका हूँ नूरा आपा को ।जब पैदा हुआ तो मेरी माँ बीमार पड़ गई ।मैं माँ के बिस्तर के एक कोने में पड़ा रहता ।क्यों नूरा आपा मुझे माँ के बिस्तर से उठा लेती , अपनी गोद में ले लेती और अपनी छाती खोल देती ।अमरत के झरने फूट पड़ते । रोज आती । नियम से । आपा के भाई को मेरठ में काट दिया गया था । तबभी ।आती ।मुझे अपना दूध पिलाने ।.क्यों पिलाती ? क्यों मेरे लिए असगर से छुपा कर ईद की खीर का कटोरा रखती ? क्यों ? नूरा आपा को जानना बहुत मुश्किल है ।नूरा आपा की गोद में वो बच्चा कितना खूबसूरत लगेगा ।और नूरा आपा वो लोरी गाएगी जो हम सब -मैं - बसंती ,असगर और जरीना जिद करके बड़े होने तक बार -बार सुनते थे ।
वोही लोरी झूले में झूलते- झूलाते हुए नूरा आपा मीठी जबान में सुना रही है ......
सीरा पूड़ी खाने में जिस बच्चे की बारी आती वो गपागप खाने का अभिनय करता .....

झूलो रे नाना झूलो रे भई
झूलो रे नाना झूलो रे भई
थारे जिमऊँ सीरो ने पुड़ी
इन्दर खाए सीरा पूड़ी ।
गप गपा गप गपा गप
सीरा पूड़ी में घी घणों
इन्दर उपर जी घणों
झूलो रे नाना झूलो रे भई ।
चन्दा मामा आई जा रे ।
नील परी ने लई आव रे ।
नील परी के चार चार पंख ।
इन्दर बेटा ने मल्या दो दो पंख
पंख लगाई ने इन्दर उड़े ।
सारी दुनिया में राज करे
झूलो रे नाना झूलो रे भई ।

बारी -बारी से सबको नील परी दो पंख देती और वो बच्चा झूले से कूद कर घर के आसमान में उड़ता ।हम बड़े होते गए लेकिन लोरी भूले नहीं ।गप गप गप सीरा पूड़ी खाना और पंख लगाकर उड़ना भूल गए , लेकिन नूरा आपा की गोद में सिर रख लोरी सुनना भूले नहीं ।नूरा आपा से १० साल पहले आखिरी बार मिला था ।जब इन्दौर से अहमदाबाद आ रहा था ।मैं रो रहा था और नूरा आपा नौकरी की अहमियत समझा रही थी । दुआ कर रही थी । फिर सुना वे इन्दौर से अलीगढ़ चली गई । अलीगढ़ से बीच-बीच में जौनपुर । अलीगढ़ गया तो वहाँ नूरा आपा नहीं थी । हर साल नूरा आपा मेरे लिए रूमाल पर कसीदा काढ़कर और दुआओं से भरा हुआ खत भेजती । उसी से मालुम होता वे अलीगढ़ में है या जौनपुर में ।फिर सुना सख्त बीमार है ।बचने की कोई आशा नही ....ये मेरा अंधेरे में डूबना था । अचानक कहीं खो जाने ।भूल जाने की शुरूआत । फिर जो सुना वो एकदम झूठ था । सारी दुनिया झूठ और मक्कारी में धंसी हुई । ऐसी दुनिया ..... । दिल में एक सवाल उठता है ।आप से पूछ रहा हूँ । ध्यान से सुनिये बहुत जरूरी सवाल है ।कोई मर जाए तो भी क्या वो मरा हुआ फिर से जिन्दा नहीं हो सकता है? मसलन .....जैसा कि लोग बाग कहते हैं ...नूरा आपा मर गई । वैसे ये झूठ है, । मैं नही मानता हूँ इस झूठ को । लेकिन एक मिनिट के लिए मान लें नूरा आपा मर गई तो क्या वो दूसरी औरत में जिन्दा नहीं हो सकती ? जरूर हो सकती ।जरा देखिए अपनी बगल में देखिए ।नूरा आपा बैठी है । होगी जरूर । कोई है नूरा आपा? नहीं हैं ! (विराम) नही है ! मैं झूठा पाखंडी .... । उस दिन २७ जून को आसाढ़ सूखे ठूँठ सा खड़ा था ।बेहद शर्मिंदा था ।तीज थी और तेज लू ।गुस्सैल कुदरत की टेढ़ी भौंहे ,हॉस्पिटल का मुर्दा घर ।एक औरत नीचे झुकी हुई । चार लाशों के बीच बैठी रो रही थी ।पुलिस अधिकारी और कांस्टेबिल उस पर झुके थे । उसको कहा जा रहा था कि वो एफ .आय.आर .के कागज पर अपना अंगूठा लगा दें और

अपना , अपने मरे हुए रिश्तेदारों का नाम बता दें । घटना के विवरण की जरूरत नही थी,हम सब उस पर झूके थे।अचानक उसने चेहरा उठाया । नूरा आपा ! मेरे मुँह से चीख निकली । मैंने एफ. आय .आर .का वो पहले से लिखा हुआ कागज फाड़ दिया । लगातार चीख रहा था मैं कि ये ये तो मेरी नूरा आपा है ।वे लोग मुझे खींच कर आपा से दूर ले गए । मेरी हरकतें नागवार ,मेरी चीख गैर जरूरी और भौंडी ,पहचानने की क्षमता गलत । आँखे धोखे में । दिमाग है सो चल गया । कभी अपनी समझ पर हैरानी !(मौन)
कैसे ये हुआ ? वो शाम ! पुलिस कमिश्नर के दफ्तर में मेरी कम्पलेन्ट ।पुलिस के खिलाफ मेरी कम्पलेन्ट!एफ.आय. आर . । मेरी ही पुलिस पर तथ्यों को उलटाने का आरोप ।वो शाम । तूफानी । कमिश्नर,डी.आय.जी ., अधिकारी, दोस्त ,बजरंगी .....चेतावनी .... धमकी...... फोन पर फोन । वो शाम महकमे में मेरी आखिरी शाम रही ।
अपने पराये सभी खफा । कहा जिन्दगी खत्म कर ली ।एक भ्रम में एक पागलपन में । वो भ्रम था या पागलपन , बहुत प्यारा था । एक प्यार भरी टीस । खुद को जानना शुरू किया । नूरा आपा को जानना खुद जानना है ।अपने इतिहास को ,बचपन को, और आज को भी । आज रह-रह कर पुराने दिन याद आ रहे हैं । ताजियों के जुलूस में मेरा और असगर का कई-कई शरबत के गिलास पी जाना शर्त लगा के । मंगल को हनुमान जी का प्रसाद । भीड़ में हाथ बदल बदल कर दो -दो , चार-चार बार लेना । जरीना की जासूसी । जरीना एक नंबर की चुगल चोट्टी । घर भर को चुगली करने के बाद उसकी दौड़ भाग खत्म होती । वैसे ही एक नंबर की इत्तरपिन्डी । स्कूल में भारत माता बनती ।१५ अगस्त के जुलूस में । हमें कभी मौका नहीं मिलता । एक बार मिला था । मैं कुम्भकर्ण बना था और असगर मेरा सिपाही । दोनों १२ साल के लिए सो रहे थे ।आँखे थोड़ी खोल रखी थी । हमें देखने वालों को ,बाजार को धीरे से देख लेते थे । जुलूस बड़ी सड़क के चौराहे पर आ गया था ।अचानक हम दोनों चिल्लाए-कुल्फी ! और रथ से उतर ,मुकुट गिरा के कुल्फी वाले के पास दौड़ गए । उसके बाद मौका मिला नहीं ।
जरीना भारत माता में बहुत सुन्दर लगती । हम उसको भारतमाता कहकर चिढ़ाते । (रूककर उदास स्वर में)एक दिन हमारी जरीना अपने मियाँ के साथ पाकिस्तान चली गई । जाने के पहले वो पूरी शाम मुझे समझाती रही ,भय्या मैं जल्द हिन्दुस्तान आ जाऊँगी । तेरे जीजा को मना लूँगी । पाकिस्तान में कैसे रहूँगी । मैं रोता था और कहता जाता था ,यही तेरा घर है जरीना । यही हिन्दुस्तान !हर चिट्ठी में मैं याद दिलाता था । हिन्दुस्तान ही तेरा घर है जरीना । हर जवाब में वो लिखती । हाँ भय्या हिन्दस्तान ही मेरा घर है ।.........अब .....अब उसको ये बात मैं कह पाऊँगा ? कितने दिनो से उसको चिट्ठी नहीं लिखी है । कितने दिनों से जवाब नहीं आया है ,उसका ।अब क्या लिखेंगे हम ? (मौन ..दूर से देखकर)वे लोग आ रहे हैं । ये मेरी आखिरी शाम है । किसी तरह का डर नहीं है । भाग नहीं रहा हूँ । बहुत मुहब्बत करता हूँ इस जिंदगी से ..बेइन्तिहा । इसीलिए, शायद सजा मिलेगी ।....
वो बच्चा कभी भी , किसी भी वक्त आपको मिल सकता है । ध्यान रखें । उसे नूरा आपा की गोदी में रख देना और आपा से वो ही लोरी सुनना जो हम सुनते थे । (खटखट और चढ़ने की आवाज) और नूरा आपा भी मिल जाएगी । अम्मा है वो, भारतमाता । कभी खत्म नहीं होती हैं माएं ... मेरी प्यारी माँ,जीजी, दादा, बाबा सब याद आ रहे हैं ।

वसंती , जरीना , असगर .....सब नूरा आपा में समा रहे हैं और नूरा आपा एक दरिया में बदल गई है । (खटखट की आवाज) वे आ गए हैं । अब आखिरी बार देख रहा हूँ । भरपेट । कित्ती खूबसूरत जिन्दगी । (खटखट तीव्र हो रही है) कितने खूबसूरत आप सब ...कित्ती खूबसूरत नूरा आपा , और वो बच्चा और वो लोरी ! ....(दरवाजा टूटने की आवाज)

★★★★★

ग़ज़ल :-एहसान जाफरी
कोरस:—ब्रेख्त से प्रेरित

- सनत कुमार

बी - ५, युनिवर्सिटी कॉलोनी ,
वल्लभ विद्यानगर- ३८८१२० (गुज.)
दूरभाष : (०२६९२) २३४९७३